International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 8,August 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

"माध्यमिक शिक्षा के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के लिये उत्तरदायित्व बोध तथा आत्मविश्वास का होना कितना आवश्यक एवं सार्थक है"

प्रोफेसर– डॉ0 मोहम्मद उस्मान
शोध छात्रा– श्रीमती फरह जहीर
शिक्षा शास्त्र (शिक्षा संकाय)

1. पृष्ठभूमि

भारत में सामाजिक व्यवस्था के समुचित संचालन के लिये प्राचीनकाल में शिक्षण एवं प्रशिक्षण की सुदृढ़ व्यवस्था थी, क्योंकि यही एक ऐसा माध्यम है जो समाज एवं राष्ट्र को आगे बढ़ाने के लिये मार्गदर्शन, पाथय एवं सबल प्रदान कर सकता है। सामाजिक परिवर्तन या क्रांति के युग में शिक्षक का दायित्व भी अधिक गम्भीर तथा महत्वपूर्ण हो जाता है और जब संस्कृतियों का संघर्ष उपस्थित होता है, तब उनके समन्वय अथवा पुर्नजीवित करके अपने मौलिक रूप में सुरक्षित रखने का बीड़ा उन्हे ही उठाना पड़ता है।

प्राचीन समय में जब शिक्षा गुरू के अधीन थी तब गुरू को शिक्षा के क्षेत्र म स्वामित्व प्रदान था। प्रबन्ध शब्द उस समय नहीं था। इसीलिये गुरू के उत्तरदायित्व को आँकने की आवश्यकता नहीं थी। आज प्रबन्ध–तंत्र शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश कर चुका है, इसलिये अध्यापक के उत्तरदायित्व का प्रश्न उठा है। शिक्षा में उत्तरदायित्व का प्रश्न दो कारणो से आया–

अ) शिक्षा के स्तर का गिरना।

ब) शिक्षा के क्षेत्र में प्रबन्ध–तंत्र का प्रवेश।

प्रोफेसर– डॉ0 मोहम्मद उस्मान, किसान स्नातकोत्तर कॉलेज (शिक्षा संकाय) बहराईच उत्तर प्रदेश
शोध छात्रा– श्रीमती फरह जहीर एम.ए./एम.एड./नेट,
डॉ0 राम मनोहर लोहिया, अवध विश्वविद्यालय अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

शिक्षा के क्षेत्र में उत्तरदायित्व शब्द नया है, लेकिन व्यापार व उद्योग के क्षेत्र में उत्तरदायित्व शब्द नया नहीं है। किसी भी क्षेत्र में उत्तरदायित्व की भावना का प्रश्न तभी उठाया जाता है, जब यह महसूस किया जाता है कि कुछ गलत हो रहा है, जैसा कि हम जानते है कि शिक्षक शिक्षा के केन्द्र बिन्दु है, अतः उत्तरदायित्व की भावना का आरम्भ इनसे होता है। इस सम्बन्ध में हुये शोध अध्ययनों से यह स्पष्ट है कि उत्तरदायित्व शब्द पूर्व प्रचलन में नही था, यहाँ तक कि शैक्षिक शब्द कोषों में अनुपस्थित था। शिक्षा के गिरते स्तर को ऊँचा उठाने के लिये शिक्षकों में उत्तरदायित्व की भावना का होना आज के परिपेक्ष में नितान्त आवश्यक है।

उत्तरदायित्व–बोध व आत्मविश्वास क्या हैं?

उत्तरदायित्व–बोध– कर्तव्यों को पूरा करने और एक स्थिति से सम्बन्धित लक्ष्यों को प्राप्त करने का दायित्व है, जिम्मेदारी तब समाप्त होती है जब व्यक्ति ने असाइन किये गये कार्य को पूरा किया है। यदि कोई व्यक्ति असाइन किये के लिये जिम्मेदार है तो वह इसे प्रभावी ढंग से निष्पादित करने के लिये प्रतिबद्ध होगा। उत्तरदायित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि कर्तव्य–बोध से जुड़ी अवधारणा है सत्ता के दुरूप्रयोग को रोकता है, कार्य मूल्यांकन एवं कार्य मेंसुधार आसानी से किया जा सकता है। यह नीचे से ऊपर की ओर बहती है। प्रत्येक अधीनस्थ को सौंपे गये कार्यों को पूरा करने के लिये अपने बेहतर के लिये जिम्मेदार है।

आत्मविश्वास–अपनी क्षमता पर जब व्यक्ति का पूर्ण विश्वास होता है, वही उसका आत्मविश्वास होता है। आत्मविश्वास से ही स्वाधीनता प्राप्त होती है और इसके कारण ही महान कार्यों के सम्पादन में सफलता और सरलता मिलती है। जो व्यक्ति आत्मविश्वास से ओत–प्रोत है उसे अपने भविष्य के प्रति किसी भी प्रकार की चिन्ता नही

सताती है। यह ऐसी संजीवनी है जो व्यक्ति के तीनों पहलुओं चिन्तन, चरित्र और व्यवहार को प्रभावित करती है। लक्ष्य के प्रति विश्वास भी हमारी विचार तरंगों को उसी ओर उन्मुख कर देता है।

अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के लिये कितना आवश्यक एवं सार्थक–किसी भी देश या राष्ट्र के विकास में अध्यापकों की विशेष भ्मिका रहती है, वह ही देश की भावी विकास की विशेष के लिये नीव तैयार करते है। अतएव इनमें आत्मविश्वास तथा उत्तरदायित्व–बोध का होना नितान्त आवश्यक है। आत्मविश्वास से परिपूर्ण शिक्षक मानसिक भावात्मक पक्ष से परिपक्व होता है, वह आशावादी, विश्वसनीय तथा जीवन मं संतुष्ट होता है। इतना ही नही आत्मविश्वास से परिपूर्ण शिक्षक, शैक्षणिक क्षेत्र एवं विद्यार्थिंयों के जीवन में आने वाली विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समाधान आसानी से कर देता है। आत्मविश्वास व्यक्ति ही अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह कर सकता है।

शिक्षक, शिक्षा के प्रधान आधार है अतः उत्तरदायित्व का प्रश्न उन्ही के साथ प्रारम्भ होता है। अध्यापक अपना उत्तरदायित्व अपने विद्यार्थिंयों के प्रति उस समय पूरा कर सकता है जब कि वह उन्हें उत्तम शिक्षा दे और उसका पथ प्रदर्शन समाज द्वारा स्वीकृति और नैतिक आचरण को अपनाने की ओर कर सके।

विद्यार्थिंयों क प्रति उत्तरदायित्व को निभाने के लिये यह आवश्यक है कि अध्यापक ज्ञानी हो तथा अपने उत्तरदायित्वों का ज्ञान हो आत्म जवाबदेही उत्तरदायित्व सम्बन्धी निर्णय लेने की सबसे उत्तम विधि है।

उपसंहार एवं निष्कर्ष–किसी भी शैक्षिक संस्थान की सफलता व असफलता उसके शिक्षक पर निर्भर करती है। यदि विद्यालय में अध्यापन कार्य करने वाले शिक्षक आत्मविश्वास तथा अपने के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझने वाले होते है तो

विद्यालय की प्रगति होती है। अतः शिक्षकों को आत्मविश्वासी होना चाहिये पाठ्यक्रम को आत्मसात करके पढ़ाना चाहिये विद्यार्थियों की समस्याओं को सुनकर उन्हें व्यक्तिगत रूप से सुलझाने का प्रयास करना चाहिये। "एक शिक्षक तब तक वास्तविक अर्थों में शिक्षा नही दे सकता जब तक वह स्वयं न सीखता रहे। जा दीपक अपनी लौ को प्रज्वलित नहीं कर सकता, वह दूसरे दीपक को कैसे प्रकाशित कर सकता है।"

एक आत्मविश्वासी अध्यापक ही विद्यालय, समाज व राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदायित्व को पूर्णतः निभा सकता है। आत्मविश्वासहीन अध्यापक की नीव बहुत कमजोर होती है।

आत्मविश्वास एवं उत्तरदायित्व–बोध से मिलते–जुलते पूर्व में हुये शोध–अध्ययन–

1) कौल, एल (1972)–अध्यापकों के कुछ व्यक्तित्व चरों का विश्लेषण किया पाया कि वे अधिक अग्रसर, बुद्धिमान, संवेगात्मक, साहसी, निपुण, नियन्त्रित और शान्त थे। वे सामाजिक, धार्मिक मूल्यों मे भी उच्च थे तथा आर्थिक व सौन्दर्य मूल्यों में निम्न कोटि के थे।

2) यादव, अर्चना (2002)–"माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के नैतिक–निर्णय एवं शिक्षण कुशलता का विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण के परिपेक्ष्य में अध्ययन" पाया कि महिला शिक्षिका के विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण पुरूष शिक्षक के विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण में उत्तम है।

दत्ता, विभा (2003)–"Teacher effectiveness and Ascendance - submission"यह पाया कि प्रभावशीलता तथा प्रभाविता में सह–सम्बन्ध नही पाया गया।

उपर्युक्त शोध अध्ययने के अवलोकन पश्चात यह विदित हो रहा है कि उनमें अध्यापकों की योग्यताओं, अध्यापन प्रभाव, संस्था के उत्तरदायित्व आदि पर शोध कार्य हुये हैं, परन्तु शिक्षा के गिरते स्तर, कोचिंग क्लासेज में बढ़ती छात्र संख्या, नकल प्रवृत्ति आदि में सुधार के लिये अध्यापकों का आत्मविश्वास तथा उत्तरदायित्व बोध पर शोध आवश्यक है और इस पर शोध कार्य करने की आवश्यकता है।

नवीन शिक्षा नीति 2020 (8.9) में संकेतिक किया गया है कि "पब्लिक–स्कूल शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य उच्चतम गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करना होगा ताकि यह अपने बच्चों को शिक्षित करने के लिये जीवन के सभी क्षेत्रों से माता–पिता के लिये सबसे आकर्षक विकल्प बन जाय।"प्रत्येक हितकारक और शिक्षा प्रणाली में भागीदार लोग (स्कूलों, संस्थानों, शिक्षकों, अधिकारियों, समुदायों और अन्य हितकारकों) उच्चतम स्तर की इमानदारी, पूर्ण प्रतिबद्धता और अनुकरणीय कार्य नीति के साथ अपनी भूमिका निभाने के लिये जवाबदेही होंगे। जवाबदेही सुनिश्चित करते हुये मूल्यांकन प्रणाली खुद को एक उद्देश्यपूर्ण और विकासोन्मुख प्रक्रिया के रूप में विकसित करेगी। सभी व्यक्तियों की पदोन्नति मान्यता और जवाबदेही ही मूल्यांकन पर आधारित हो।

संदर्भ स्त्रोत–

1. भारतीय शिक्षा शोध संस्थान पत्रिका, जून 2020, जून 2021, दिसम्बर 2021, सरस्वती कुंज निराला नगर, लखनऊ
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 (माध्यमिक–शिक्षा से जुड़ी)– 8.6, 8.9
3. शिक्षा–विद डॉ0 जगमोहन सिंह राजपूत पूर्व निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा समाचार पत्रों में प्रकाशित लेख
4. पाण्डेय रामशकल और मिश्र करूणशंकर– भारतीय शिक्षा की समसामयिकी समस्यायें।
5. मिश्र, डॉ0 संन्त कुमार– भारत में शिक्षा व्यवस्था
6. शोध–प्रबन्ध–कौल, एल (1972) यादव, अर्चना (2002) और दत्ता, विभा (2003)